HINDI

क्रूस द्वारा स्वतंत्रता हेतू एक निर्देशिक

लेखक चार्ल्स आर सालोमन, एड.डी

जब आप इसे पढ़ते हैं तो हो सकता है आप निराशा व कुंठा के बीच हों । शायद लोगों ने आपको नीचे गिरा दिया हो और शायद परमेश्वर इतना दूर लग रहा हो कि वह आपकी सहायता नहीं कर सकता । आप ने जीवन में बढ़ते हुये अपने आपको ऐसा पाया होगा कि आपको कोई प्रेम नहीं करता और आपने अपने आपको एक व्यक्ति के रुप में स्वीकार नहीं किया होगा और प्रेम नहीं किया होगा ।

हो सकता है कि आप जीवन का साथ देने मे अयोग्य महसूस कर रहे है या ऐसे दुख या कुंठा से गुजर रहे हैं कि आपका आत्महत्या करने को मन चाह रहा होगा । क्या आपका अपने प्रिय लोगों के साथ संबंध टूटने पर है या इन टूटते संबंधों को सुधारा नही जा सकता? यदि ये बात है तो आपके लिये यहां एक सही संदेश है ।

परमेश्वर आपको बहुत प्रेम करता है इसलिये उसने अपने पुत्र प्रभु यीशु को भेजा ताकि वह आपके पापों के लिये अपना प्राण दे । यीशु मृतको में से जी उठा ताकि जब आप उस पर विश्वास करे तो वह आपके लिये अपना जीवन दे ।खीष्ट का जीवन आपके लिये पर्याप्त है ताकि विजयी, बहुतायत का तथा आनन्द पूर्ण जीवन जीने लिये वह सहायक हो ।

यदि आप इस सच्चाई को नहीं जान पाये है तो आपके लिये यह सरल संदेश है - जब आप प्रभु यीशु पर विश्वास करेंगे तो आपका जीवन बदल सकता है । इसे समझने के लिए आप रेखाचित्र देखें ।

ये संभव है कि आपने अपने उद्धार हेतू प्रभु यीशु पर विश्वास किया परन्तु अब एक हारे हुये विश्वासी की तरह संघर्ष कर रहे है । जब आप प्रभु यीशु मसीह को अपना जीवन आप में और आपके द्वारा जीने देंगे, तो यही संदेश आपके जीवन को बदल देगा ।

कृपया इस प्रार्थना के साथ आने वाले पृष्ठों का अभ्यन करें ताकि परमेश्वर आपको इन सच्चाईयों को समझने में मदद करे । यदि आपके पास बैबल हो तो इन बाइबल पदों को पढ़े ।

आपकी रचना

बाइबल मनुष्य के तीन भाग द्वारा रचे जाने का वर्णन करती है वे आत्मा, शरीर व प्राण हैं [1] चक्र का रेखाचित्र आत्मा, शरीर व प्राण के आपसी संबंध को समझने मे सहायता करता है तथा यह भी बताता है कि केंद्र कैसे, मनुष्य के जीवन को प्रभावित करता है ।

शरीर की इंद्रियों के द्वारा हम अपने वातावरण से जुड़ते है । प्राण या व्यक्तित्व, मष्तिष्क, भावना तथा इच्छा के कार्यो से बना हुआ है । प्राण एक दूसरे के साथ संबंध जोड़ने में सहायक है । आत्मा आत्मिक संसार से हमारा संबंध जोड़ने में सहायता करता है । जब हम नया जन्म पाते हैं तथा पवित्र आत्मा हमारी आत्मा में वास करता है तब वह हमें हमारी योग्यताओं, सीमाओं तथा परिस्थितियों से उपर रहने में मदद करता है ।

मानवीय आत्मा या तो आदम (शैतान के परिवार) या खीष्ट (परमेश्वर के परिवार) से जुड़ा होता है । हम इस संसार मे आदम की संतान के रुप में जन्में हैं । रेखांकित चित्र की तिरछी रेखा मे जो रिक्त हुये चिन्ह है आदम के साथ आरंभ हुये हमारे पूर्वजों के वंशज का प्रतिनिधित्व करते हैं और हमारे जीवन अटूट श्रृंखला के पीछे वहां तक पहुचते है । अत: हमारे पूर्वजों के द्वारा, जो कुछ आदम को हुआ वही हमें भी हुआ । जब उसने पाप किया, हमने पाप किया । जब वह आत्मिक रूप से मर गया - हम मर गये । जैसे हम अपने परदादा मे

[1] 1 थिस्स 5:23 - शांति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे, और तुम्हारी आत्मा व प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहे ।

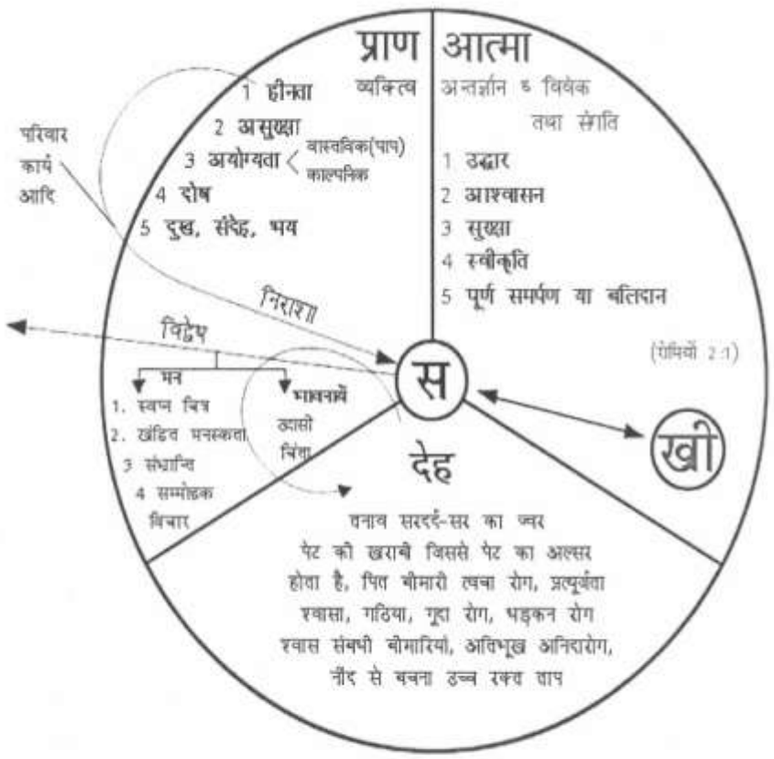

मर जाते गर यदि वह बिना किसी संतान हुये मर गया होता । इसलिये जबकि आत्मिक मृत्यु परमेश्वर से अलगाव है हम सब आत्मिक रुप से मृत जन्मे है, हम पापी शारीरिक जन्म से पूर्व ही बन चुके है । यदि बात यह है तो, जब हम पाप [2] करते है, तो हम वही करते हैं जो हमारे अंदर से प्राकृतिक रुप से आता है ।

प्रत्येक जीवन जो आदम मे है अनन्त नर्क मे समाप्त होगा, जैसे कि रेखाचित्र में दर्शाया गया है [3] यद्यपि हम अच्छा जीवन जीते हैं जैसा कि मानव स्तर के अनुसार जीवन होता है, हम परमेश्वर से अलग (परमेश्वर के लिये मृत) हैं और तब तक अलग हैं जब तक हम आत्मिक जन्म के द्वारा उसके परिवार में जन्म नहीं ले लेते ।

आपकी आवश्यकतायें

शब्द "उद्धार' (चक्र चित्र में) का अर्थ आत्मिक जन्म है । केवल उद्धार के द्वारा हम आदम का जीवन छोड़ सकते हैं और मसीह के जीवन में जन्म ले सकते हैं , जो अनन्त जीवन है जैसा कि रेखांकित चित्र में वर्णित किया गया है [4] आत्मिक रुप से जन्म लेने के लिये सर्वप्रथम हमें यह पहचानना व मान लेना है, हमारे जीवन, पूर्वजों के गलत रेखा में होने के कारण, हम पापी के रुप में जन्म लिये हैं और यह कि हम पापी है, हमने पाप किया है । हमें तब मसीह को अपने जीवन में

[2] रोमियों 3:23 - क्यों कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं ।

[3] रोमियों 6:23 - परन्तु पाप की मजदूरी तो मृत्यु है परन्तु परमेश्वर का दान हमारे प्रभु यीशु में अनन्त जीवन है ।

[4] चक्र रेखाचित्र में आत्मा क्षेत्र में पहली बात

[5] यूहन्ना 3:3 - यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि मैं तुझसे सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्म ले तो परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता ।

स्वीकार करना है क्योंकि हमारे पापों का दाम चुकाने के लिये हमारे स्थान में वह मर गया और हमें जीवन देने के लिये वह पुनः जी उठा ।

जब हम विश्वास के द्वारा इस प्रकार मसीह के आत्मा को ग्रहण करते हैं , हम उसके साथ एक आत्मा बन जाते हैं ।[6] परीक्षा में जय पाने तथा हमारे जीवन में परमेश्वर की शांति को अनुभव करने के लिये हमें हमारे उद्धार का **आश्वासन**[7] होना चाहिये । यदि इसे वास्तविक तथा स्थायी होना है तो इस आश्वासन को परमेश्वर के वचन की सुनिश्चित सच्चाईयों पर आधारित होना चाहिये ।

बहुत सारे लोग जो अपने मनों में ये जानते हैं कि उन्होंने व्यक्तिगत रुप से प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया है लेकिन इसके बावजूद भी उनके आश्वासन में एक निश्चित कमी हो सकती है क्योंकि उन्होंने अपने को बचा हुआ महसूस नही किया । कई लोग आत्मिक संघर्ष से त्रस्त रहते है जो बचपन में तिरस्कृत किये जाने से पैदा होता है । ऐसे व्यक्ति की भावनायें बाइबल में वर्णित सच्ची वास्तविकताओं से मेल नहीं खातीं या वर्तमान संसार में वैसा नहीं दिखाई देता । जब मसीह हमारे जीवनो का केंद्र बन जाता है, वह इस प्रकार की क्षतिग्रस्त भावनाओं को चंगा करता तथा उन्हें सही कर देता है ।

अब एक विश्वासी को जानना चाहिये कि वह प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर के साथ एक सुरक्षित, अनन्त आत्मिक सबंध में प्रवेश कर चुका है[8] और वह सुरक्षा[9] को, जिसे वह चाहता था, उस पर भरोसा कर सकता है तथा उसका आनन्द उठा सकता है ।

जब हम मसीह को ग्रहण करते हैं तो परमेश्वर मसीह में हमें ग्रहण करता है । वह हमें , जैसे हम है, वैसे ही ग्रहण करता है । परन्तु दुख इस बात का है कि केवल कुछ इस सच्चाई को समझते तथा अनुभव करते है । हम में से कई मानवीय दृष्टिकोण से, **स्वीकृति**[10] को दबाव से अपनाते है जो मनुष्य के प्रदर्शन तथा योग्यता पर आधारित है । सो वे सोचते है कि वैसे ही परमेश्वर द्वारा स्वीकृति को भी कमा लें यद्यपि परमेश्वर प्रत्येक विश्वासी के मसीही जीवन को ग्रहण कर चुका है[11] । और कई विश्वास द्वारा प्राप्त इस स्वतंत्र स्वीकृति या धार्मिकता की स्थिति को कभी स्वीकार नहीं करते ।

विश्वासी जिसके पास उद्धार, आश्वासन, सुरक्षा तथा स्वीकृति (परमेश्वर से) है उसकी व्यवहारिक प्रतिक्रिया "**संपूर्ण समर्पण**"[12,13] (परमेश्वर के प्रति) है जो अपने जीवन का राज्य उस अनुग्रहकारी परमेश्वर को सौंप रहा है । इसमें यह बात नीहित है कि हम उसे हमारे अंदर, हमारे द्वारा, और हमारे साथ उसकी इच्छानुसार उसे कुछ भी करने की अनुमति दे रहे है । सारांश में हम अपना सारा अधिकार त्याग रहे है । परन्तु कई विश्वासी प्रभु यीशु मसीह को अपना जीवन पूर्णत समर्पित नहीं करते क्योंकि वे अपना जीवन अपनी इच्छा व योजना अनुसार जीना चाहते है । वे डरते हैं कि परमेश्वर का नियंत्रण बोझ है । क्योंकि उनके अनुसार वह हमारी स्वतंत्रता व आनन्द को नियंत्रित कर देता है । वह व्यक्ति जो परमेश्वर को अपने जीवन मे राज्य नहीं करने देता है वह अपने स्वार्थ के लिये जीता है । स्वार्थी जीवन कभी संतुष्टि नहीं देता ।

जितनी जल्दी हम परमेश्वर को अपने जीवन में नियंत्रण करने देते है, कुछ ऐसी बातें निश्चित रुप से घटती है जो बातें हमें पसंद नहीं । बहुधा, परिस्थितियों हमारे विरोध में हो जाती है तथा हमें प्रायः हानि के निकट पहुंचा देती है । यह इसलिये होता है क्यों कि परमेश्वर हमारे जीवन पर हमारे नियंत्रण के अंत में हमें ले आता है । जब परमेश्वर नियंत्रण अपने हाथ में लेता है तो हम नियंत्रण खो देते हैं । परिस्थितियां तथा लोग जो इस योजना मे परमेश्वर, इस्तेमाल करता है वे बहुधा अपने मे आत्मिक नहीं होते । वे हमारे लिये अनचाहा (जो हमारे कारण नही) दुख पैदा करते हैं । परन्तु वे इस प्रकार के दुख है जो हमारे जीवन में परमेश्वर की योजना को पूरी करते हैं[15] । दुख या अनुशासन के

---

[6] 1 कुरि 6:17 - और जो प्रभु की संगति में रहता है, वह उसके साथ एक आत्मा हो जाता है ।

[7] चक्र रेखाचित्र में आत्मा क्षेत्र में दूसरी बात ।

[8] *यूहन्ना 5:24* - परन्तु मैं तुमसे सचमुच कहता हूं कि जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले कि प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंच चुका है ।

[9] चक्र रेखा चित्र में आत्मा क्षेत्र में तीसरी बात ।

[10] चक्र रेखा चित्र में आत्मा क्षेत्र में चौथी बात ।

[11] *इफिसियों 1:6* - कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्यारे में सेंत मेंत दिया ।

[12] *2 कुरि 5:21* - जो पाप से अज्ञात था उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जायें ।

[13] चक्र रेखाचित्र में आत्माक्षेत्र में 5 वीं बात ।

[14] *रोमियों 12:1* - इसलिये हे भाईयो मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर विनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ, यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है ।

[15] *1 पतरस 2:20,21* - क्योंकि यदि तुमने अपराध करके घूसे खाये और धीरज धरा, तो इसमें बड़ाई की क्या बात है यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो तो यह परमेश्वर को भाता है । और तुम इसी के लिये बुलाये भी गये हो क्यों कि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठा कर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो । *फिलिप्पियों 1:23-30* - क्यों कि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है और मर जाना लाभ है । पर यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे काम के लिये लाभ दायक है तो मैं नहीं जानता कि किसको चुनूं 30. और तुम्हें वैसे ही परिश्रम करना है, जैसा तुमने मुझे करते देखा है, और अब भी सुनते हो कि मैं वैसा ही करता हूं ।

समय[16], हमारे लिये आनन्दित होना, इतना सरल नही है । परन्तु यह वह भट्ठी है जो हमारे लिये पवित्रता को जन्म देती है, जिसको हम चाह करते हैं ।

परमेश्वर विश्वासी के लिये चाहता है कि वह मसीह के स्वरुप के अनुकूल हो जाये ।[17] इस प्रकार की अनुकूलता में दुख सम्मिलित है । बाइबल के उन वचनों पर ध्यान दे ''उनके लिए जो, परमेश्वर से प्रेम रखते है, सब बातें मिल कर भलाई को उत्पन्न करती है ।''[18] ''सब बातें जो मिलकर भलाई को उत्पन्न करती है'', इसमें दुख सम्मिलित है और इस बात को दुख उठाने वाले व्यक्ति के लिये, भलाई के रुप में देखना कठिन है परन्तु विश्वासी लोग इस प्रकार के पीड़ादायक अनुभवों की ओर मुड़ कर जान सकेंगे और महसूस करेंगे कि परमेश्वर ने सारी बातों को उनके ही लाभ के लिये होने दिया है ।

आपका आन्तरिक संघर्ष

चक्र चित्र के केंद्र मे स (स्वयं या स्वार्थ) प्राणनियंत्रित जीवन को या 'देह' का प्रतिनिधित्व करता है । देह का यह अर्थ है कि विश्वासी अपने स्वयं की सामर्थ से जीवन जीने का प्रयास करता जाता है ।

[16] *फिलिप्पियों 3.10* - ... और मैं उसको और उसके मृत्युंजय की सामर्थ को और उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानूं और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं । *इब्रानी 12.11* - और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते सहते पक्के हो गये है, पीछे उन्हें चैन के साथ प्रतिफल मिलता है ।

[17] *रोमियों 8.29* - क्योंकि जिन्हें उसने पहिले से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरुप में हो ताकि वह बहुत भाईयों में पहिलौठा ठहरे ।

[18] *रोमियों 8.28* - और हम जानते है, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते है, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई को उत्पन्न करती है, अर्थात उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छानुसार बुलाये हुये है ।

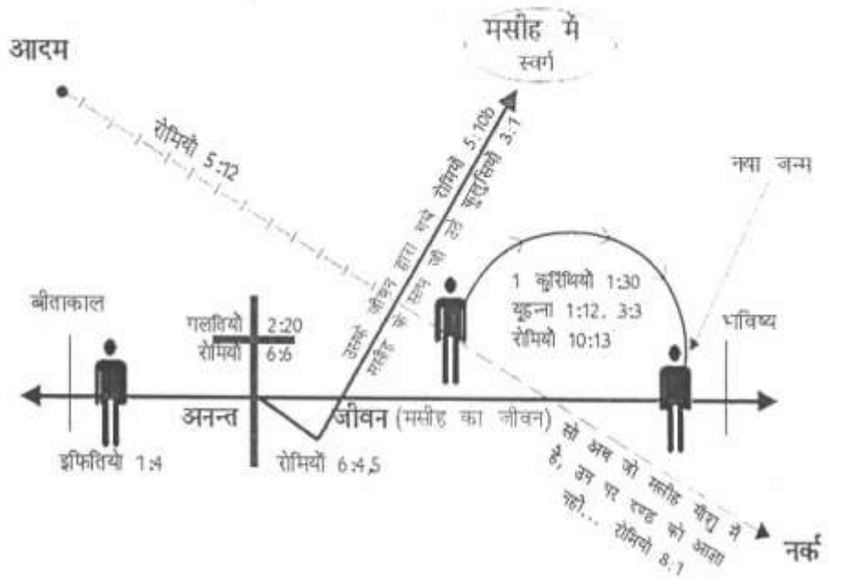

'देह' कई विश्वासियों के मसीही जीवन के संपूर्ण क्षेत्र को दबाव मे रखता है । स्वार्थ, अपनी आवश्यकता को पूरी करने के लिये कई तरीके जैसे धन भौतिक वस्तुयें , लोग, सफलतायें , प्रसिद्धि, यौन, अधिकार, को प्रयोग करता है तथा अधिकार जमाने वाला प्रेम, परोपकारी प्रयास, कलीसियाई गतिविधी, आत्मिक भागीदारी आदि कई प्रकार की ऐसी बातों को अपनाता है । कई विश्वासियों के लिये ये मानना कठिन होता है कि ये बातें 'देह' से जुड़ी है, विशेष रुप से जब समाज या चर्च ऐसी उपलब्धियों की बड़ाई करता या उनका आदर करता है । परन्तु इस प्रकार के तरीकों से उत्पन्न हुआ संघर्ष हमें अपने जाल में फंसाता है तथा हमें हराता जाता है ।

इसलिये मसीहियों के लिये 'देह' - मूर्तिपूजा के समान गंभीर - एक बहुत गंभीर समस्या है । मसीह से अलग कुछ भी यहां तक कि हम भी - यदि अपने जीवन का केंद्र हैं तो यह मूर्ति है । अत: परमेश्वर, 'देह' के साथ दृढ़ता से व्यवहार करता है और विश्वासी को दिखाता है कि आत्मकें द्वित किस प्रकार परिस्थितियों के साथ निबटने

पाता है, वह इसे अपने आप पर छोड़ देता है तथा अपने जीवन को मसीह - जीवन से बदल देने में रुचि रखता है ।

जितनी देर हम स्वार्थ ('देह') के नियंत्रण में रहते हैं , चक रेखाचित्र के प्राण (व्यक्तित्व) भाग मे दिखाये संघर्ष जारी रहते हैं । वे आयु तथा बढ़ती हुई जिम्मेदारियों के साथ और बदतर होते जाते हैं । समय समय पर मनोवैज्ञानिक तौर पर अच्छे से व्यवस्थित स्वार्थी जीवन, जीवन में बहुत समय तक परिस्थितियों के साथ निभाने योग्य होता है परन्तु परिणाम संतोषजनक नही होते । प्राण भाग मे दिखायी गई मनोवैज्ञानिक समस्यायें स्वार्थी जीवन का एक परिणाम होती हैं ।

मनोवैज्ञानिक कमजोरियां, दोष भावना (दोनो वास्तविक तथा काल्पनिक) के साथ, स्वार्थ केंद्रित जीवन मे कई स्तर की निराशाओं को जन्म देती है । लोग इस निराशा से कई प्रकार से व्यवहार करते हैं । कुछ लोग इससे अपने को मुक्त करने के लिये दूसरों पर शारीरिक या शाब्दिक गुस्सा उतारते हैं । कुछ लोग जहां तक हो सके गुस्सा, विद्वेष तथा निराशा को दबाने का प्रयास करते हैं क्योंकि या तो उन्हे प्रतिरोध का डर होता है या वे हर बात के लिये जो वे सामना करते है, उसके लिये अपने को दोष लगाते हैं । परन्तु जब निराशा तथा विद्वेष को दबाया जाता है यह मन या भावनायें या दोनों को प्रभावित करते हैं । कुछ आंतरिक विद्वेष तथा गुस्सा, निराशा में अंत होते हैं । ये चिंता, भावनाओं को प्रभावित करती है । कुछ अपने मन का इस्तेमाल कर और वास्तविकता को बरबाद करते या अस्वीकार करते है, जोकि वास्तविक, समस्या जो स्वार्थी जीवन है उससे निपटने की आवश्यकता से बचना चाहते हैं ।

मनोवैज्ञानिक संघर्ष जिनके द्वारा खीचते जाने का अन्त नहीं है सामान्य रुप से (सोमेटिक)

शिकायतों में उनका अंत होता है जैसा कि रेखा चित्र में दिखाया गया है । शारीरिक तकलीफें, यद्यपि वास्तविक हैं , यथार्थ में गंभीर समस्या हैं जो स्वार्थी जीवन की वास्तविक लक्षण हैं ।

आपका छुटकारा

ये मानसिक तथा 'देह' के लक्षण अदृश्य होने लगते है जब व्यक्ति यह जान लेता है कि परमेश्वर मूल समस्या से, स्वार्थ को जीवन उसके से हटा देने के द्वारा, व्यवहार कर सकता है ।

रेखांकित चित्र, में 'मृत्यु से जीवन' सिद्धान्त को दर्शाया गया है - यह आंतरिक संघर्ष को परमेश्वर के निकालने का तरीका है ।

क्षैतिज रेखा अनन्त जीवन - मसीह के जीवन का प्रतिनिधित्व करती है । अनन्त शब्द समय की सीमा से आगे बढ़ जाने का संकेत करता है । चूंकि मसीह प्रभु है, वह हमेशा जीवित रहा है तथा रहेगा । उसका जीवन आज और कल और सदा तक एक सा रहेगा ।[19] रेखा की बांयी ओर जैसा दिखाया गया है, मसीह देह बना [20] तथा मनुष्य की देह में लगभग 33 वर्ष रहा । तब, वह क्रूस पर चढ़ाया गया, गाड़ा गया, तीसरे दिन मृतकों में से जी भी उठा [21] वह आज तक जीवित है [22] अत: अनन्तजीवन

[19] *इब्रानी 13:8* – यीशु मसीह आज, और कल और सदा तक एक सा है ।

[20] *यूहन्ना 1:14* – और वचन देह धारी हुआ, और अनुग्रह व सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा ।

[21] *1 कुरि 15:3-4* – इसी कारण मैंने सबसे पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिय मर गया ।

[22] *इब्रानी 7:25* – इसी लिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं , वह उनका पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि उनके लिये बिनती करने को सर्वदा जीवित है ।

(मसीह-जीवन) विश्वासी के लिये न केवल वर्तमान तथा भविष्य की वास्तविकता है परन्तु यह अनन्त बीते काल को भी सम्मिलित करता है ।

जब तक हम नया जन्म नहीं लेते [23] हम मसीह के अनन्त जीवन में नहीं है, परन्तु हम आदम के मृत जीवन में हैं जैसा कि हम आरंभ में देख चुके है । हमें केवल अपने पापों की क्षमा की ही आवश्यकता नहीं परन्तु जीवन की भी आवश्यकता है । प्रभु यीशु हमें , दोनों देने आया - हमारे पापों के लिये मरने के द्वारा तथा हमें पुनरुत्थान का जीवन देने के द्वारा ।[24]

यदि आप मसीही है, तो आप इतना जरुर जानते है । आप शायद जो नही जानते वे नीचे लिखी ये बातें हैं -

विश्वासी के लिये शारीरिक मृत्यु इस दुनियां के जीवन का वह मार्ग है जो स्वर्ग में , जीवन में खुलता है, यह पापों की उपस्थिति से परमेश्वर की उपस्थिति में खुलता है । एक इसी प्रकार की दूसरी मृत्यु भी है जैसे ही एक व्यक्ति नया जन्म प्राप्त करता है वह आदम के जीवन के लिये बाह्य रुप से मर जाता है तथा मसीह के अनन्त जीवन में जन्म ले लेता है।

परन्तु इतना सब कुछ नहीं है । हम भी उसके जीवन - अनन्त जीवन के हिस्सेदार हैं । न केवल यीशु मसीह (उसके जीवन) में बपतिस्मा लिया

[23] *यूहन्ना 3:3* – यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता ।

[24] *यूहन्ना 10:10* – चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है, मैं इस लिये आया कि सब जीवन पायें और बहुतायत से पायें ।

है परन्तु उसकी मृत्यु में भी । [25] हम एक ही बार में दो जीवन - आदम का जीवन तथा मसीह का जीवन नहीं जी सकते ।

आप की पहचान

जब हम विश्वास से मसीह को ग्रहण करते है परमेश्वर यीशु की क्रूस पर मृत्यु को, हमारे पापों के दाम के रुप में लेता है । परन्तु इसका और बड़ा अर्थ है । हम एक नये जीवन में प्रवेश करते है । इस नये जीवन में प्रवेश करने के द्वारा हम अनन्त भूतकाल के साथ ही अनन्त भविष्य के जीवन में पहुंच जाते हैं । इसे दूसरे रुप में ऐसे समझ सकते है हम आदम में अपने इतिहास के बुरे जीवन, साथ ही भले को, मसीह के अनन्त इतिहास में बदल देते है । हम एक नये परिवार रुपी वृक्ष में रोप दिये जाते है । मसीह के जीवन में हिस्सेदार बनने के द्वारा हम उसकी मृत्यु, गाड़े जाने, पुनरुत्थान तथा स्वर्गारोहण में भागीदार बन जाते है और स्वर्गीय स्थानों में स्थान पाते हैं [26]। हम नया जन्म पाने के समय उसके जीवन को प्राप्त करते हैं ।[27]

[25] रोमियों 6:3 - क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ।

[26] रोमियों 6:3-6 - क्या तुम नहीं जानते ... बपतिस्मा लिया सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गये, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नये जीवन की सी चाल चलें । क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गये है, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जायें गे । क्योंकि हम जानते है कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाये, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें । गलतियों 2:20 - मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझमें जीवित है, और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आपको

जब तक हम व्यक्तिगत विश्वास के अनुभव के द्वारा यह नहीं जान लेते कि हम मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाये गये हैं , हम उन्हीं तरीकों को इस्तेमाल करते हुये जो हमने पुराने जीवन में सीखा, उनके सहारे ही मसीह के लिये जीवन जीने का प्रयास करते रहेंगे । स्वार्थी जीवन, मसीही - जीवन के साथ संघर्ष करता है । तथा हमें अन्तर की परेशानी में ले जाता है । परन्तु जब, विश्वास के द्वारा - क्रूस पर मसीह की मृत्यु व पुनरुत्थान की एकता में हम अपने अधिकारपूर्ण स्थान को प्राप्त करते है तब और केवल तभी हम सच्चाई से "जीवन की नवीनता में चलते हैं[28] "[29]जहां पुरानी बातें बीत गई देखो सब नई हो गई ।"

क्रूस - अनुभव आत्मा संचालित जीवन का द्वार है । [30] जो मसीह में हमारी पहचान तथा पाप - स्वीकृति के हमारे स्थान पर निर्भर है (यह कि हम मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाये या जिलाये गये हैं ।) यह 'मृत्यु से जीवन' पराजय के ऊपर विजय है । क्रूस की ओर हमारा मार्ग और साथ में क्रूस

दे दिया । इफिसियों 2:6 - मसीह यीशु में उसके साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया ।

[27] 1 यूहन्ना 5:11-12 - और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है । 12 जिसके पास पुत्र है उसके पास जीवन है, और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है ।

[28] रोमियों 6:4ब - ...ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नये जीवन की सी चाल चलें ।

[29] 2 कुरि 5:17 - सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गई है , देखो वे सब नई हो गई ।

[30] गलतियों 5:16 - पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे ।

स्वयं, दुख का मार्ग है, परन्तु यही केवल एक मार्ग है जो हमारे दुख के अन्त तक हमें लिये जाता है । इस प्रकार विश्वासी के लिये दुख का उत्तर और उसका अभिप्राय हम समझ सकते है ।

क्या आप आन्तरिक संघर्ष तथा स्थायी पराजय से थक गये हैं और तैयार हैं कि विश्वास के द्वारा, इसका अंत कर दे ? क्या आप उन सब बातों के लिये जो आप हैं मरने की इच्छा रखते है ताकि उन सब बातों के लिये जो मसीह है, जी सकें ? यह करने के लिये आपको अपनी स्वार्थी जीवन को, मसीही जीवन में बदलने की इच्छा रखना होगा तथा पवित्र आत्मा से भर जाना या उसके द्वारा नियंत्रित होना होगा । यदि आप ऐसा करने से इंकार करते है तो आप 'देह' में ही चलते रहने का प्रयास कर रहे है, पवित्र आत्मा को दुखी कर रहे है, और इससे संघर्ष, दुख तथा पराजय जारी रहेगा ।

उद्धार-प्रार्थना

यदि आप वेदना से थक गये है जो आपके अपने ढंग से कार्य करने का परिणाम है यदि आप उसे अपने तरीके से कार्य करने दें गे तो मसीह आपको स्वतंत्र कर सकता है ।

यदि आपने मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रुप में कभी ग्रहण नहीं किया, आपको चाहिये कि आप परमेश्वर को, नये जीवन देने के द्वारा नई सृष्टि बनाने दें । आप नया जन्म पा सकते है गर आप गंभीरता से यह प्रार्थना करें:

"स्वर्गीय पिता मैं जानता हूं कि मैं पापी हूं, अभी भी आदम के जीवन में हूं, और मैने पाप किया है । मैं विश्वास करता हूं कि तूने अपने एकलौते पुत्र, प्रभु यीशु को मेरे पापों की खातिर मेरे स्थान पर मरने भेजा । मै यह भी विश्वास करता हूं कि वह फिर से जी उठा, और अब जीवित है, और मैं अभी उसे अपनी आत्मा में , उद्धारकर्ता के रुप में ग्रहण करता हूं । मैं जो हूं सब, जो मेरा है सब